2. हाट-बाज़ार और मण्डी

तुम हाट-बाज़ार तो गए ही होगे, मण्डी भी गए होगे या उसके बारे में सुना होगा। अपने शिक्षक के साथ चर्चा करो, हाट और मण्डी में क्या फर्क है।

हमने पिछले पाठ में पढ़ा कि हम एक-दूसरे पर निर्भर हैं। हम जो चीज़ें उपयोग में लाते हैं, वे कई इलाकों से और कई लोगों से होती हुई हम तक पहुंचती हैं। चीज़ें पहुंचाने का काम व्यापारी करते हैं। व्यापारी अलग-अलग तरह की वस्तुएं लेकर हाट-बाज़ार में आते हैं। हाट-बाज़ार में चीज़ें खरीदी ओर बेची जाती हैं। आओ इस पाठ में देखें कि हाट-बाज़ार और मण्डी में कैसे काम होता है।

स्थायी दुकानों के बाज़ार

तुमने शहर का बाज़ार तो देखा होगा। वहां **स्थायी** दुकानें होती हैं जो लगभग रोज़ खुली रहती हैं। इनमें तरह-तरह की चीज़ें बिकती हैं। शहर में रहने वाले लोगों की संख्या अधिक होने के कारण दुकानों का सामान रोज़ ही थोड़ा बहुत बिकता रहता है। सब खरीददार अलग अलग दुकानों में जाकर चीज़ों के भाव पता करते हैं और यह भी देखते हैं कि सामान कैसा है। फिर भाव-ताव करके सामान खरीदते हैं।

शहर का बाज़ार

बाज़ार में अगर किसी चीज़ की एक ही दुकान हो तो दुकानदार मनमाने भाव पर उसे बेच सकता है। पर बाज़ार में एक ही चीज़ कई दुकानों में मिल जाती है। सभी दुकानदार अपना-अपना माल बेचने की कोशिश करते हैं। किसी एक दुकानदार की मनमानी नहीं चलती।

क्या गांवों में भी बहुत सारी स्थायी दुकानें होती हैं? कुछ बड़े गांवों को छोड़कर, इस तरह के बाज़ार अधिकतर गांवों में नहीं होते। इसका क्या कारण है?

किसी शहर की तुलना में एक गांव में कम लोग रहते हैं। अगर गांव में बहुत सारी दुकानें हों तो उनका माल नहीं बिकेगा। इसलिए गांवों

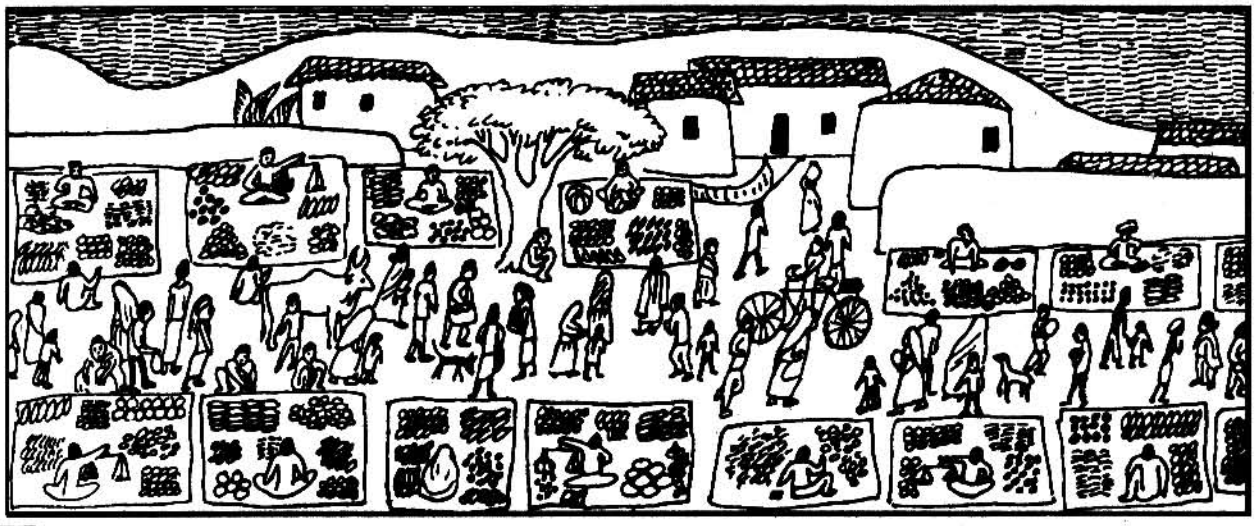

हाट

में शहरों की तरह बाज़ार नज़र नहीं आते। फिर गांव वालों के लिए बाज़ार कहां हैं? सभी गांवों के लोग सामान खरीदने के लिए शहर नहीं जा सकते। इसलिए गांव के लोग खरीदने-बेचने का काम **हाट-बाज़ार** में करते हैं।

सही विकल्प चुनो - "स्थायी" शब्द का अर्थ क्या है–
स्थान, एक जगह पर टिका रहना,
बदलते रहना।
शहर के बाज़ार और हाट-बाज़ार में दो फर्क बताओ।

गांव में हाट-बाज़ार

ऊपर हाट का यह चित्र शहर के बाज़ार के चित्र से कितना अलग दिखता है! ज़मीन पर चादर बिछाकर बैठे लोग ढेर सारी चीज़ें बेच रहे हैं। कहीं जूते बिक रहे हैं तो कहीं सब्ज़ी। कहीं कुम्हारों की दुकानें लगी हैं तो कहीं सब्ज़ी वालों की दुकानें।

हाट की दुकानें बाज़ार की दुकानों की तरह स्थायी नहीं हैं – यानी एक ही जगह पर टिकी नहीं रहतीं। हाट में दुकान लगाने वाला व्यापारी रात को दुकान समेट लेता है। अगले दिन वह अपनी दुकान किसी दूसरी जगह के हाट में लगाता है।

तो क्या हर गांव में हाट लगता है? नहीं हर गांव में हाट नहीं लगता। जिस गांव में हाट लगता है, वहां आसपास के कई गांवों के लोग आते हैं। हाट का एक दिन निश्चित होता है। अधिकांश जगहों पर हफ्ते में एक बार हाट लगता है।

गांव के लोगों के लिए हाट बहुत ज़रूरी है। अपने परिवार के लिए कपड़ा, जूता, चप्पल, सब्ज़ी, गुड़, मिर्ची आदि खरीदने के लिए ये लोग हाट पहुंचते हैं।

तुम्हारे आस-पास स्थायी बाज़ार कहां-कहां हैं, उन जगहों के नाम लिखो।
तुम्हारे आसपास हाट कहां-कहां लगता है, उन जगहों के नाम लिखो।

हाट-बाज़ार का एक व्यापारी

इटारसी शहर में एक व्यापारी रहता है – आफताब। चलो उससे मिलने चलते हैं। वह हाट में ताले और तरह-तरह के औज़ार बेचता है। वह

आफताब की दुकान। तुम्हें इस चित्र में क्या-क्या नज़र आ रहा है?

अपनी दुकान कई हाट-बाज़ारों में लगाता है।

हाट-बाज़ार में दुकान लगाने वाले बहुत से व्यापारी कई हाटों में घूमते रहते हैं। एक दिन यहां दुकान लगाई दूसरे दिन और कहीं। आफताब भी इसी प्रकार का एक व्यापारी है। क्या इन व्यापारियों का घूमने का कोई **क्रम** है या जहां मन करे वहां चले जाते हैं? अक्सर ये व्यापारी अपने **अनुभव** के अनुसार और अपनी सुविधा के हिसाब से घूमने का क्रम बना लेते हैं।

आफताब इटारसी में रहता है। वह सोमवार को सिवनी-मालवा के हाट-बाज़ार में बैठता है और मंगलवार को बाबई में। बुधवार को वह छुट्टी रखता है। गुरुवार को इटारसी के हाट-बाज़ार में दुकान लगाता है। फिर शुक्रवार को भौंरा, शनिवार को पाथाखेड़ा और रविवार को सारणी के बाज़ारों में जाता है। इस तरह आफ़ताब हफ्ते भर घूमता रहता है। सात दिन में उसका एक चक्र पूरा होता है। हफ्ते भर घूमते-घूमते आफताब थक जाता है। हफ्ते में छह दिन दुकान लगाना और सिर्फ एक दिन का आराम — थकेगा तो!

नीचे आफताब के सप्ताह का चक्र नक्शे में बताया गया है। तुम देख सकते हो कि किस तरह वह अपने घर के स्थान यानी इटारसी के आसपास घूमता है। वह कैसे जाता होगा, इसका भी अंदाज़ा लगा सकते हो, क्योंकि नक्शे में सड़क और रेल के मार्ग भी बने हैं।

आफताब को रोज़ नई जगह दुकान लगानी होती है। जब दुकान जमानी हो तब वह चादर बिछाकर उस पर सामान रखता है। शाम को हाट-बाज़ार बंद होने के बाद हिसाब करके वापस पेटी में सामान रखता है। फिर घर लौट जाता है।

परन्तु शुक्रवार और शनिवार वह रात को घर

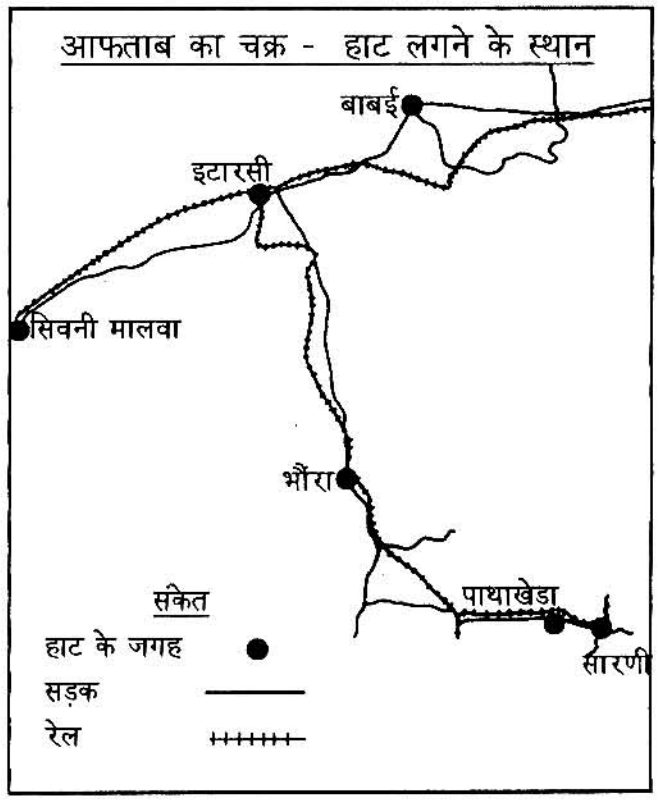

नहीं लौटता। भौंरा, पाथाखेड़ा और सारणी एक ही रास्ते पर हैं। इसलिए वह भौंरा में रात रुककर अगले दिन पाथाखेड़ा जाता है और पाथाखेड़ा में रात रुककर सारणी जाता है। सारणी से रविवार को इटारसी लौट आता है।

नीचे दी गई चक्र में आफताब के बारे में जानकारी पूरी करो।

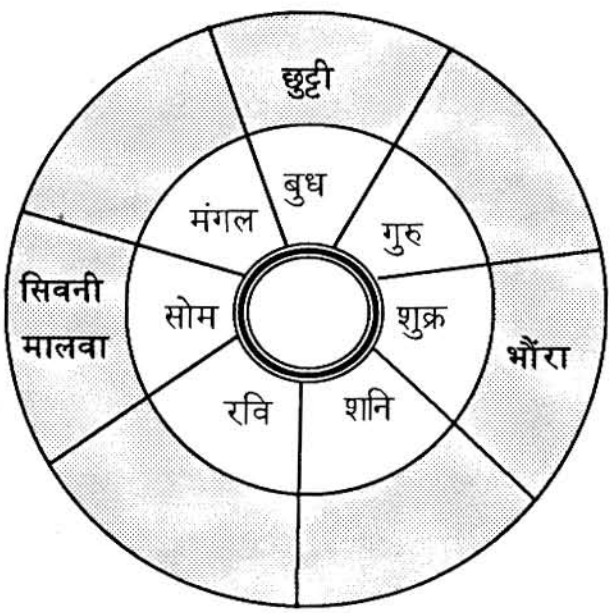

हर जगह के हाट में दस-बीस या उससे ज़्यादा गांवों से लाग आते हैं। इस तरह जो ताले आफताब बेचता है, वे लगभग दो सौ गांवों के लोगों तक पहुंच जाते हैं।

कई व्यापारी छुट्टी के दिन सामान लाने का काम करते हैं। सामान खरीदने का काम आफताब नहीं, उसके परिवार के लोग करते हैं। वे औज़ार और ताले खरीदने के लिए महीने में एक बार जबलपुर जाते हैं। जबलपुर से वे थोक में दो-तीन हज़ार रुपये का सामान लाते हैं।

इटारसी की तुलना में जबलपुर में ताले सस्ते मिल जाते हैं। जो ताला आफताब को 9 रुपये में पडता है उसे वह हाट में 12 रुपये में बेचता है। कभी-कभी आफताब सोचता है कि दिल्ली जाकर छह-आठ हज़ार रुपये का सामान लाना चाहिए। जबलपुर के व्यापारी भी दिल्ली के बाज़ार से ताले खरीदते हैं। दिल्ली के पास अलीगढ़ में ताले बनते हैं और वहां जबलपुर से भी सस्ते में ताले मिल सकते हैं।

आफताब क्यों घूमता रहता है?

आफताब के परिवार वाले जबलपुर से सामान क्यों लाते हैं?

तुम भी हाट जाते होगे। वहां किन गांवों के लोग आते हैं - सूची बनाओ।

किसी हाट के व्यापारी से पता करो कि उसका हफ्ते भर का चक्र क्या है? वह हफ्ते भर कहां-कहां अपनी दुकान लगाता है?

क्या वह व्यापारी हफ्ते के सातों दिन दुकान लगाता है? यदि नहीं, तो जिन दिनों वह दुकान नहीं लगाता, उन दिनों वह क्या करता है?

व्यापारी से मिली इस जानकारी को तालिका बनाकर उसमें भरो।

तुम अपनी तहसील के नक्शे में देखो कि तुम्हारी तहसील में कहां-कहां हाट लगता है। कई ऐसे शहर हैं, जहां पुराने समय से हफ्ते में एक दिन का बाज़ार लगता है। वहां के लोग स्थायी दुकानों वाले बाज़ारों में जाते हैं और हाट में भी।

तुमने 'एक दूसरे पर निर्भर' पाठ में देखा कि व्यापारियों के द्वारा सामान दूर-दूर तक पहुंचता है। हाट में दुकान लगाने वाले व्यापारी दूर-दूर के

गांवों तक जाते हैं। ये व्यापारी शहर के बाज़ार से सामान खरीदते हैं। बड़े शहरों (जैसे भोपाल, इन्दौर और जबलपुर) के बाज़ारों में सामान देश के कई इलाकों से आता है। कई गांवों के लोग भी हाट में दुकान लगते हैं। जूते, मटके, टोकरी जैसे सामान कारीगर हाट में लाकर बेचते हैं। कई किसान अनाज और सब्ज़ी भी बेचने आते हैं। इस प्रकार हाट-बाज़ार में पास और दूर की कई जगहों से सामान आता है। इस कारण कई जगहें एक दूसरे से जुड़ जाती हैं।

गलत वाक्यों को सुधारो।

क) हाट में स्थाई दुकानें होती हैं।

ख) आफताब जो ताले सिवनी में बेचता है, वे अलीगढ़ में बनते हैं।

मण्डी

हमने देखा कि हाट-बाज़ार द्वारा दूर-दूर के गांवों तक चीज़ें पहुंच जाती हैं। इसी प्रकार गांव से भी कई वस्तुएं बाहर जाती हैं। खेतों में उगने वाली फसलें दूर-दूर के इलाकों में पहुंचती हैं। यह कैसे होता है?

कई किसान अपनी उपज मण्डी में बेचने के लिए ले जाते हैं। मण्डी के व्यापारी उपज खरीद लेते हैं और दूर-दूर तक के इलाकों में पहुंचाते हैं।

चलो एक मण्डी में जाकर देखें कि वहां उपज कैसे बिकती है?

मण्डी के चित्र और हाट के चित्र में तुम्हें क्या अन्तर दिख रहा है?

मण्डी

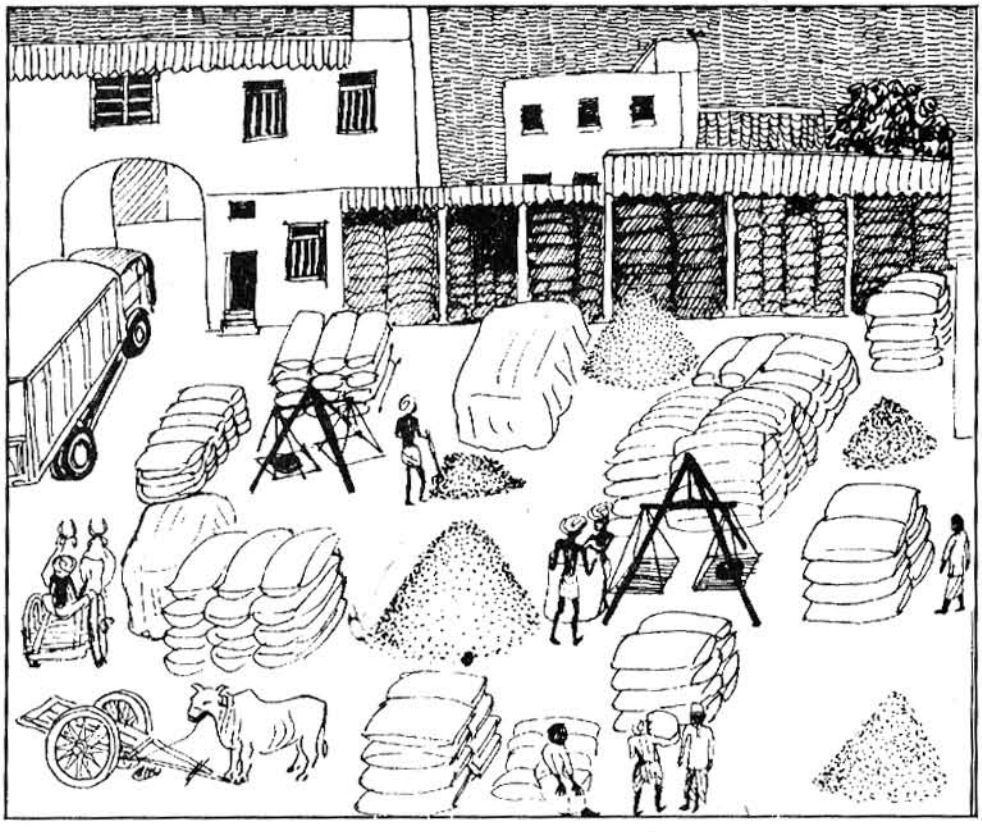

मण्डी के चारों ओर व्यापारियों के कोठों से घिरा मैदान है। सामने एक बड़ा सा फाटक है, जिसमें से लद्दे हुए ट्रक बाहर निकल रहे हैं। साथ ही मण्डी में आने वाले ट्रैक्टरों और बैलगाड़ियों का तांता भी लगा हुआ है। मैदान में बोरियों के कई ढेर दिख रहे हैं। व्यापारियों के कोठे भी बोरियों से भरे हैं। कोठों के सामने व्यापारियों के नामों के तख्ते लटके हैं - "धन्नूमल ऐंड संस", "छगनलाल ग्रेन मर्चेन्ट्स" आदि।

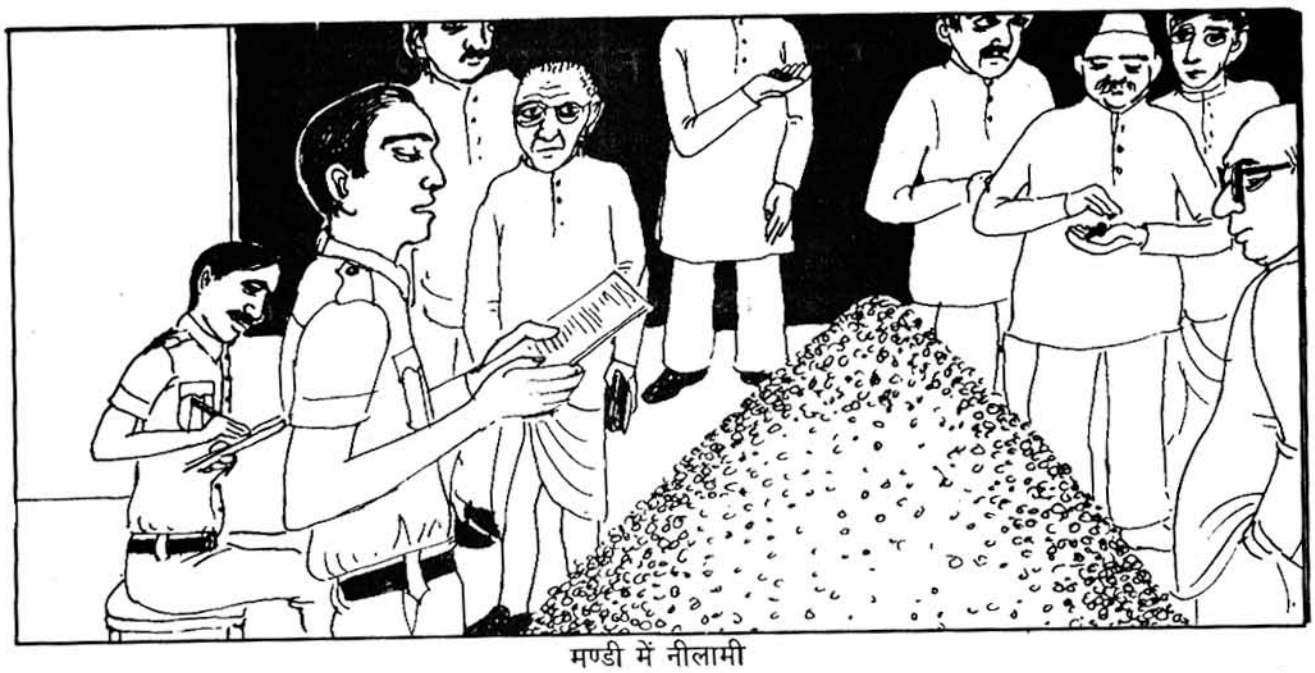

मण्डी में नीलामी

मैदान में यहां-वहां बड़े-बड़े कांटे (तराजू) रखे हैं, जिन पर अनाज तौला जा रहा है। कई जगह अनाज की खुली ढेरियां भी हैं, जिनके चारों ओर लोग खड़े हैं। देखें तो वहां क्या हो रहा है!

मण्डी में नीलामी द्वारा अनाज की बिक्री

एक जगह पर चने की **नीलामी** हो रही है। चना कन्हैयालाल किसान का है। वर्दी पहने दो आदमी खड़े हैं। उनके हाथ में रसीद पुस्तिका है। क्या तुम चित्र में इन्हें पहचान सकते हो? ये पुलिस वाले नहीं, **मण्डी समिति**के कर्मचारी हैं। एक **बोली** लगवा रहा है और दूसरा पर्ची बना रहा है। "गुलाबी चना 275" वर्दी वाले एक कर्मचारी ने बोली लगाई। कुछ व्यापारी आसपास खड़े हैं। कन्हैयालाल का चना हाथ में उठाकर परख रहे हैं। क्या किस्म है? दाने कैसे हैं? कीड़े तो नहीं हैं? कचरा कितना है? व्यापारी इन सब बातों का अन्दाज़ लगा रहे हैं।

एक व्यापारी ने बोली लगाई "280 रुपये"। वह उन व्यापारियों में से है, जिन्होंने मण्डी समिति के पास अपना **पंजीयन**(नाम दर्ज़) कराया हुआ है। मण्डी में जिनका पंजीयन हुआ हो, वे ही व्यापारी बोली लगा सकते हैं। मण्डी में घुसकर कोई भी व्यापारी बोली लगाना शुरू नहीं कर सकता है।

कर्मचारी ने चिल्लाकर कहा "280 एक, 280 दो।" इतने में एक और व्यापारी बोला "290 रुपये।" इस तरह बोली लगती गई। कुछ देर बाद मूलचन्द सेठ ने 335 रुपये की बोली लगाई। मण्डी समिति का कर्मचारी चिल्लाया "335 एक, 335 दो .... 335 तीन।" यही नीलामी की आखिरी बोली हो गई। आखिरी बोली के बाद समिति के कर्मचारी ने कन्हैयालाल को पर्ची काट कर दी। पर्ची को पढ़कर पता चलता है कि कन्हैयालाल का चना 335 रु. प्रति क्विंटल के भाव से सेठ मूलचंद को बिक गया।

किसी एक बोली पर तीन तक की गिनती पूरी होने से पहले यदि कोई व्यापारी चाहे तो उसे काटकर ऊंची बोली लगा सकता है। तीन की गिनती

होने के बाद कोई व्यापारी चाहे भी तो उससे ऊंची बोली नहीं लगा सकता है।

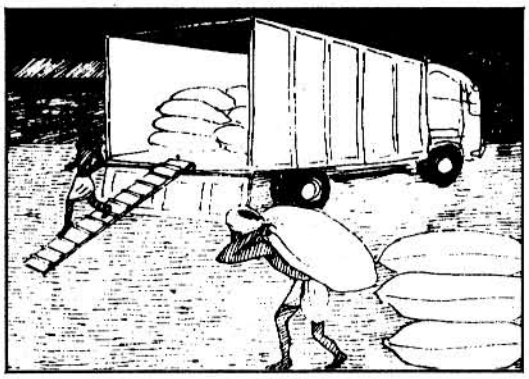
हम्माल

कन्हैयालाल और मूलचन्द ने कांटे पर चना तुलवाया। दस बोरी (दस क्विंटल) चना निकला। चना तुलवाने के बाद सेठ मूलचन्द ने पर्ची में लिखे भाव तथा वज़न के अनुसार बिल बनाया और कन्हैयालाल को रुपये दिये। उसने बोरों को हम्मालों द्वारा अपने कोठों पर पहुंचवाया। मूलचन्द ने और भी चना खरीदा है। उसे यह सारा चना इन्दौर भिजवाना है।

बताओ सेठ मूलचन्द ने कन्हैयालाल को कितने रुपये दिए?

कन्हैयालाल के चने की नीलामी 335 रुपये प्रति क्विंटल पर तय हुई थी। पर एक दूसरे किसान भीरूलाल को अपने चने के लिए 320 रुपये प्रति क्विंटल ही मिले। इस तरह सब किसानों के चने की नीलामी अलग-अलग बोलियों पर तय हुई।

कन्हैयालाल और भीरूलाल का चना अलग-अलग दामों पर क्यों बिका चर्चा करो।

मण्डी से माल खरीदने वाले व्यापारियों को मण्डी समिति को कुछ पैसे देने होते हैं। जैसे, मूलचन्द ने दिन भर में जितने रुपए का माल खरीदा उसका 1% यानी 100 रुपया में एक रुपया मण्डी समिति को दिया। इस चने की खरीदी पर उसने मण्डी समिति को 33.50 रुपये दिये। मण्डी समिति नीलामी करवाने के लिए यह पैसा व्यापारियों से लेती है। इसे **मण्डी शुल्क** कहते हैं।

मण्डी में चने के अलावा दूसरे अनाजों की भी नीलामी हो रही है। मण्डी के कर्मचारी हर जगह बोलियां लगवा रहे हैं। खूब ज़ोरों का शोर है। कोई अनजान व्यक्ति पहली बार आये तो शायद भौंचक्का रह जाए।

मण्डी समिति

मण्डी में बिक्री की पूरी व्यवस्था मण्डी समिति की देख-रेख में हुई। मण्डी समिति कैसे बनती है और उसका सदस्य कौन होता है? मण्डी समिति चुनाव द्वारा बनाई जाती है। चुनाव कौन लोग करते हैं? हर मण्डी का एक क्षेत्र या इलाका तय किया गया है। उस इलाके में आने वाली पंचायतों के सदस्य और मण्डी में खरीदने वाले पंजीकृत व्यापारी मिलकर समिति को चुनते हैं। समिति के सदस्य 5 सालों के लिए चुने जाते हैं। मण्डी समिति के सदस्य व्यापारी और किसान दोनों होते हैं। लेकिन नियम यह है कि समिति का अध्यक्ष और उपाध्यक्ष *किसान* ही हो सकता है। समिति में केवल दो व्यापारी सदस्य हो सकते हैं।

मण्डी में वर्दी पहने कर्मचारी कौन हैं और ये क्या करवाते हैं?

मण्डी समिति कैसे बनती हैं? सही विकल्प चुनो– पंचायत के सदस्य चुनते हैं/ व्यापारी चुनते हैं,/ सरकार तय करती है/ पंचायत के सदस्य और व्यापारी चुनते हैं।

अपने विचार बताओ – मण्डी समिति का अध्यक्ष और उपाध्यक्ष किसान ही होना क्या उचित है?

मण्डी और हाट-बाज़ार की तुलना

तुमने मण्डी में देखा कि खरीदी-बिक्री कई बोरियों के हिसाब से हो रही थी। कोई भी दो-चार किलो बेचता या खरीदता नहीं था। लेकिनहाट-बाज़ार में लोग अपने-अपने परिवारों के लिए छोटी मात्रा में खरीदते हैं। छोटी मात्रा में खरीदने-बेचने को **खेरची** का व्यापार या फुटकर व्यापार कहते हैं।

व्यापारी मण्डी से जो सामान खरीदते हैं, उसे वे आगे बेचते हैं। बड़ी मात्रा में व्यापार को **थोक** व्यापार कहा जाता है।

थोक व्यापार न केवल अनाज मण्डी में होता है, परन्तु सभी चीज़ों की अपनी मण्डी या खास थोक के बाज़ार होते हैं। सब्ज़ी मण्डी, लोहा मण्डी, कपड़ा मण्डी, तेल मण्डी आदि जैसे थोक बाज़ार हैं। कुछ थोक बाज़ारों में सारा खरीदना-बेचना नीलामी से ही होता है। लेकिन अन्य थोक बाज़ारों में दूसरे तरीकों से खरीदा बेचा जाता है। जैसे लोहा मण्डी या थोक कपड़ा बाज़ार में नीलामी नहीं होती।

इन सभी थोक बाज़ारों में बिक्री बड़ी मात्रा में होती है। यदि कोई एक किलो तेल या अनाज या एक मीटर कपड़ा खरीदना चाहे तो नहीं खरीद सकता है। थोक में खरीदने के भाव भी खेरची से कम होते हैं।

आढ़त प्रथा

मण्डी के कानून में1986 में कई बदलाव किए गए। उसके पहले मण्डी समिति के कर्मचारी नीलामी नहीं करवाते थे। अनाज की सारी नीलामी **आढ़तियों** के हाथ में थी। किसान अपना अनाज ले जाकर मण्डी में आढ़तिए की दुकान पर रख देता था, और अनाज बेचने के लिए नंबर लगा देता था। जब उसका अनाज बेचने की बारी आती तब आढ़तिया बोली लगवाता। भाव तय होने पर आढ़तिया किसान को पैसे दे देता। बाद में आढ़तिया व्यापारी से यह पैसे वसूल कर लेता था। बिक्री करवाने के लिए और व्यवस्था करने के लिए आढ़तिया किसान से कुछ पैसे (आढ़त)लेता था।

देवास शहर के पास खरेली गांव का एक छात्र है श्रीधर। उसने 1986 से पहले की देवास मण्डी की एक कहानी लिखी थीं जो "चकमक" पत्रिका में छपी थी। कहानी इस प्रकार है:

श्रीधर की कहानी

मैं और मेरे पिताजी दोनों साथ में सोयाबीन बेचने के लिए देवास कृषि उपज मण्डी में गए। मण्डी प्रांगण में हम्माल द्वारा ट्रक से माल उतरवाया। हम्माल को पैसे देने लगे, तब दोनों बड़ी देर तक लड़ते रहे।

फिर मैंने माल की देख-रेख की और पिताजी बाज़ार में घूमने गए। और वहां कुछ नाश्ता-पानी करके मेरे लिए लाये। मैंने भी नाश्ता किया। इसी बीच में एक व्यापारी मेरे पिताजी से पूछने लगा, "ए बुड्ढे तेरा सोयाबीन क्या भाव देगा।" तब पिताजी ने कहा, "सेठ साहब आप ज़रा तमीज़ से बोलो और अपनी सफेदी का ख्याल करो क्योंकि आप को भी अगर ऐसे कहूं तो आप को भी क्रोध आएगा।"

तभी एक दूसरा व्यापारी आया और उसने कहा, "दादा साहब, आप सोयाबीन किस भाव में देंगे?" मेरे पिताजी ने कहा, "बाज़ार में क्या भाव चल रहा है, उसके मुताबिक बेचूंगा।" इसी बीच माल बेचने का जो नंबर आढ़तिए के पास

आढ़तिया नीलामी करवाते हुए

लगा हुआ था, वह नंबर आ गया। बोली लगने लगी। 395 की आखिरी बोली लगी। प्रति क्विंटल 395 का भाव मेरे सोयाबीन का तय हुआ।

सोयाबीन तुला और दो क्विंटल निकला। कुल 790 रुपये का सोयाबीन हुआ। आढ़तिया बड़ा चतुर था। पिताजी को गांव का बुड्ढा और सीधा समझकर उसने बिल में 670 रुपये का योग दिखाया। पिताजी पैसे लेने आढ़तिए की दुकान पे जाने ही वाले थे कि मैंने कहा– "पिताजी बिल मुझे तो बताओ।"

"तू क्या समझेगा।" पिताजी ने कहा। "पिताजी मैं आठवीं में पढ़ता हूँ, मैं भी समझता हूं।" मैंने कहा।

तब पिताजी ने मुझे बिल दिया। बिल में सोयाबीन दो क्विंटल लिखा था, उसका मूल्य 690 रुपये, तथा 20 रुपये आढ़तिए की आढ़त काटकर 670 रुपये का बिल था।

"पिताजी इसमें तो 100 रुपये कम लिखे हैं" मैंने पिताजी से कहा। "नहीं बेटे ऐसा नहीं होगा।" पिताजी बोले। "पिताजी दो क्विंटल के कितने रुपये होते हैं?" मैंने पूछा। "790 रुपये" पिताजी बोले। "इसमें से 20 रुपये आढ़त के कम कर दो।" मैंने कहा। "अब 770 रुपये हुए" तब पिताजी बोले। "इसमें तो 670 रुपये लिखे हुए हैं" मैंने कहा।

तब मैं और पिताजी उसी आढ़तिए के पास गए और बोले कि इस बिल में आपने 100 रुपये कम लिखे हैं। आढ़तिए ने बिल ठीक किया, मेरी पीठ ठोंकी और कहा कि लड़का बुद्धिमान है। फिर उसीने रुपये दिये। पिताजी ने कहा "वाह बेटे तूने तो कमाल कर दिया, नहीं तो 100 रुपये तो आढ़तिया पार कर जाता।"

यह कहानी मण्डी समितियों द्वारा नीलामी करवाने से पहले के दिनों की झलक दिखाती है। तब किसानों को बिक्री करवाने के लिए आढ़त देनी होती थी। श्रीधर की कहानी में तो आढ़तिये ने तुरन्त नकद भुगतान कर दिया। लेकिन उन दिनों सभी आढ़तिए किसानों को समय पर भुगतान नहीं करते थे। किसानों को अपना पैसा लेने के लिए आढ़तियों के कई चक्कर लगाने पड़ते थे। उनके साथ धोखा भी हो जाता था।

पहले बिक्री कौन करवाता था, और आजकल कैसी होती है?

यदि श्रीधर के पिताजी आज मण्डी में सोयाबीन बेचते तो क्या उन्हें आढ़त देनी पड़ती?

मण्डी शुल्क कौन देता है और किसे दिया जाता है?

कानून में बदलाव क्यों किया गया?

जुलाई 1986 में मण्डी के कानून में जो बदलाव किए गये उनके अनुसार आढ़तियों की जगह अब मण्डी समिति अपने कर्मचारियों द्वारा अनाज की नीलामी करवाती है।

कानून में बदलाव के तीन मुख्य कारण हैं। एक कारण यह है कि किसान को आढ़त नहीं देनी पड़े। पहले, आढ़तिया सौदा तय करने के लिए किसानों से आढ़त वसूल करता था। अब केवल खरीदने वाला व्यापारी, मण्डी समिति को शुल्क देता है। इस कमीशन के रुपयों से मण्डी समिति मण्डी का काम-काज करवाती है।

कानून में बदलाव का दूसरा कारण है, नीलामी करवाने में किसानों के साथ कोई धोखा नहीं हो। अतः मण्डी समिति ही बोली लगवाती है।

बहुत साल पहले जब मण्डी का कानून ही नहीं बना था, उस समय अनाज की बिक्री कई तरीकों से होती थी। किसानों के लिए आढ़तिया अपने तरीकों से सौदा तय करवाता था। मण्डी का कानून बनने के बाद कृषि उपज की बिक्री केवल खुली नीलामी द्वारा ही हो सकती है। यह नीलामी किसानों के सामने एक जगह की जाती है।

तीसरा कारण है, किसानों को भुगतान तुरन्त मिले। मण्डी समिति का मुख्य काम है कि वह व्यापारी से किसान को उसी दिन भुगतान दिलवाये। व्यापारी भुगतान नहीं करे तो किसान मण्डी समिति से शिकायत कर सकते हैं।

नए कानून से किसानों को फायदा हो रहा है, पर पूरी तरह नहीं। कुछ मण्डियों में व्यापारी किसानों को तुरन्त भुगतान नहीं करते हैं, और किसानों को पैसों के लिए कई चक्कर लगाने पड़ते हैं। कुछ जगहों पर समिति भी अपना काम ठीक से नहीं करती है और कानून के नियमों का पालन नहीं हो रहा है। नीचे दिये गए उदाहरण में मण्डी समिति की कुछ कमियां नज़र आती हैं। कुछ समय पहले एक समाचार पत्र में यह खबर छपी थी।

अनाज मण्डी में आज धरना ज़ारी

(6 फरवरी 1991) निप्र – आज तीसरे दिन भी यहां किसानों के धरने के कारण मण्डी के काम-काज ठप्प रहे। पुलिस ने धोखाधड़ी के आरोप में फरार एक व्यापारी के खिलाफ मामला दर्ज़ कर लिया है। इस मामले की जांच हेतु भोपाल से आए मण्डी के सरकारी अधिकारी कल रात तथा आज दोपहर मण्डी के कागज़ातों की जांच करते रहे। उधर धरने पर बैठे किसान नेताओं ने घोषणा की कि जब तक किसानों के 20 लाख के भुगतान और मण्डी में फैली अव्यवस्था का निर्णय नहीं होता, तब तक आंदोलन जारी रहेगा।

मण्डी कानून के अनुसार किसानों को किन-किन बातों से फायदा हो सकता है?

इस उदाहरण में कानून की कौन सी बात सफल नहीं हो पा रही है?

तम्हारे यहां की मण्डी

तुम्हें अपने यहां पता करना है कि लोग मण्डी कानून के बारे में क्या सोचते हैं।

यदि तुम गाँव में रहते हो तो पता करो:–
क. तुम्हारे गांव के पास अनाज मण्डी कहां है?
ख. अनाज मण्डी करीब होने से क्या कोई फायदा होता है, समझाओ।
ग. तुम्हारे गांव में कई किसान होंगे जो अनाज बेचने मण्डी नहीं जाते। इसके क्या-क्या कारण हैं?
घ. कुछ किसानों से पता करो कि मण्डी कानून से उनको क्या फायदा हुआ है?
यदि तुम शहर में रहते हो तो पता करो:–
क. क्या तुम्हारे शहर में अनाज मण्डी है, कहां?
ख. तुम्हारे शहर में अनाज कहां-कहां से आता है?
ग. क्या तुम्हारे यहां की मण्डी से अनाज दूसरे शहरों को भी जाता है? कहां-कहां?
घ. शहर के व्यापारियों से पूछकर बताओ कि मण्डी कानून कितना सफल हो पाया है?

हमने मण्डी में हो रहे अनाज व्यापार के बारे में पढ़ा। पर हर किसान मण्डी में आकर अपनी उपज नहीं बेच पाता है। किसान अपने खेतों की फसल कई जगह बेचते हैं। कई किसान अपनी उपज गांव में ही दूसरे किसानों को बेचते हैं। कुछ किसान गांव में आए व्यापारी को बेचते हैं और कुछ किसान पास के शहर जाकर व्यापारियों को बेच आते हैं। गांव में ऐसे भी किसान होते हैं जो हाट-बाज़ार में थोड़ी उपज बेच देते हैं।

अभ्यास के लिए प्रश्न

1. पृष्ठ 113 में बने चित्र और पृष्ठ 116 पर बने चित्रों की तुलना करते हुए बताओ कि मण्डी के नियमों में क्या बदलाव आए हैं?
2. मण्डी में नीलामी कैसे होती है? नीलामी करवाने के लिए किसे और कितने पैसे भरने होते हैं?
3. कई लोग एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। यह समझाओ कि वह हाट के द्वारा कैसे जुड़े हैं और मण्डी द्वारा कैसे जुड़े हैं।
4. थोक व्यापार किसे कहते हैं – दो वाक्यों में लिखो।
5. पृष्ठ 114 को पढ़ कर बताओ कि मण्डी समिति का चुनाव कैसे होता है?
6. आढ़त प्रथा से किसानों को क्या परेशानियां होती थीं?
7. मण्डी और हाट में क्या फर्क है? नीचे दी गई तालिका को कापी में उतारकर भरो।

	मण्डी	हाट
दुकानें		
बेचने वाले		
खरीदने वाले		
खरीदने-बेचने के तरीके		